

## Original Article

### किशोरों में ऑनलाइन शोषण और उसकी रोकथाम हेतु मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

डॉ. रानी कुमारी

सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग श्री राधा कृष्ण गोयनका महाविद्यालय,  
सीतामढी बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

Email: [ranipandit7082@gmail.com](mailto:ranipandit7082@gmail.com)

Manuscript ID:

शोध सारांश

JRD -2025-170522

ISSN: 2230-9578

Volume 17

Issue 51

Pp. 135-140

May 2025

Submitted: 04 Apr. 2025

Revised: 14 Apr. 2025

Accepted: 25 May. 2025

Published: 31 May. 2025

वर्तमान समय में इंटरनेट और सोशल मीडिया किशोरों के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं। यद्यपि ये माध्यम सूचना, संवाद और अभिव्यक्ति के प्रभावशाली साधन हैं, परंतु इनका दुरुपयोग किशोरों के लिए गंभीर मानसिक एवं सामाजिक खतरों का कारण बनता जा रहा है। इस शोध में किशोरों में ऑनलाइन शोषण (जैसे साइबरबुलिंग, यौन उत्पीड़न, धमकी, और डिजिटल धोखाधड़ी) की प्रवृत्तियों, उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव और उससे बचाव हेतु मनोवैज्ञानिक उपायों का विश्लेषण किया गया है। शोध में 200 किशोरों (आयु 13-18 वर्ष) को शामिल किया गया, जिन्हें शहरी और अर्ध-शहरी विद्यालयों से सरल यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया। डेटा संग्रह के लिए साइबरबुलिंग विक्रिमाइज़ेशन स्केल, बेक की एंग्रायटी इन्वेंटरी, इंटरनेट एडिक्शन टेस्ट और साइबर जागरूकता प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण SPSS सॉफ्टवेयर के माध्यम से किया गया, जिसमें वर्णात्मक आंकड़े, स्वतंत्र-समूह *t*-test, सहसंबंध (correlation) एवं रिग्रेशन विश्लेषण सम्मिलित थे।

परिणामों से स्पष्ट हुआ कि ऑनलाइन शोषण का शिकार होने वाले किशोरों में चिंता, अवसाद, आत्मग्लानि और सामाजिक अलगाव की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। वहीं साइबर जागरूक और पारिवारिक-सहायता प्राप्त किशोरों में मानसिक लचीलापन अपेक्षाकृत अधिक था। यह अध्ययन दर्शाता है कि किशोरों की ऑनलाइन सुरक्षा हेतु मनोवैज्ञानिक जागरूकता, डिजिटल शिक्षा और पारिवारिक-सामाजिक सहयोग अत्यंत आवश्यक हैं। यह शोध समाज, विद्यालयों और अभिभावकों के लिए एक दिशा-निर्देश प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार किशोरों को साइबर शोषण से बचाया जा सकता है और उनके मानसिक स्वास्थ्य को संरक्षित किया जा सकता है।

**मुख्य शब्द:-** किशोरावस्था, मनोवैज्ञानिक प्रभाव, मानसिक स्वास्थ्य, साइबर सुरक्षा इंटरनेट का दुरुपयोग, रोकथाम रणनीतियाँ, सामाजिक समर्थन

#### प्रस्तावना:

किशोरावस्था मानव जीवन का एक संवेदनशील, परिवर्तनशील और जटिल चरण होता है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास तीव्र गति से होता है। यह वह समय है जब व्यक्ति आत्म-चिंतन, पहचान निर्माण और सामाजिक संबंधों की खोज में संलग्न रहता है। आज के डिजिटल युग में, इंटरनेट और सोशल मीडिया किशोरों के जीवन का महत्वपूर्ण अंग बन चुके हैं। ये माध्यम जहां एक ओर सूचना, मनोरंजन और सामाजिक संपर्क के स्रोत हैं, वहीं दूसरी ओर इसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं — विशेषकर ऑनलाइन शोषण के रूप में। ऑनलाइन शोषण, जिसे साइबरबुलिंग, ऑनलाइन उत्पीड़न, यौन शोषण, धमकी अथवा सोशल मीडिया पर मानसिक प्रताड़ना के रूप में देखा जा सकता है, किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डालता है। किशोर जब अपनी पहचान, संबंध और आत्म-सम्मान

#### Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the [Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International](https://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/) Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.

#### Address for correspondence:

डॉ. रानी कुमारी, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग श्री राधा कृष्ण गोयनका महाविद्यालय,  
सीतामढी बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

#### How to cite this article:

कुमारी, रानी. (2025). किशोरों में ऑनलाइन शोषण और उसकी रोकथाम हेतु मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण.

Journal of Research & Development, 17(5), 135–140. <https://doi.org/10.5281/zenodo.15709472>



Quick Response Code:



Website:

<https://jrdrvb.org/>

DOI:10.5281/zenodo.15709472



को लेकर संवेदनशील होते हैं, तब डिजिटल माध्यमों पर होने वाला उत्पीड़न उन्हें गहरे मानसिक संकट की ओर ले जा सकता है। यह चिंता, अवसाद, आत्मग्लानि, आत्महत्या की प्रवृत्ति, आत्म-निर्वासन और आत्मविश्वास में कमी जैसे दुष्परिणाम उत्पन्न करता है। मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य से, किशोरों की ऑनलाइन सुरक्षा को केवल तकनीकी रूप से नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी समझना आवश्यक है। यह शोध पत्र इस बात की पड़ताल करता है कि ऑनलाइन शोषण का किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है, किस प्रकार की मनोवैज्ञानिक समस्याएं जन्म लेती हैं, और किन मनोवैज्ञानिक उपायों, जागरूकता कार्यक्रमों एवं पारिवारिक सहयोग के माध्यम से इसकी रोकथाम की जा सकती है। इस अध्ययन में 200 किशोरों के अनुभवों और मानसिक प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण कर SPSS सॉफ्टवेयर के माध्यम से सांख्यिकीय परीक्षण किए गए हैं, जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि किस प्रकार मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर किशोरों को साइबर खतरों से सुरक्षित किया जा सकता है।

## साहित्य समीक्षा :

ऑनलाइन शोषण, विशेष रूप से किशोरों के संदर्भ में, एक उभरती हुई वैश्विक समस्या बन गई है जिस पर विगत वर्षों में अनेक शोधकर्ताओं ने ध्यान केंद्रित किया है। जो इस विषय को मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने में सहायक हैं।

**Smith et al. (2008)** के अनुसार, साइबरबुलिंग स्कूल स्तर पर पारंपरिक बुलिंग की तुलना में अधिक मानसिक दबाव उत्पन्न करता है, क्योंकि यह शोषण 24x7 चलता रहता है और पीड़ित कहीं भी सुरक्षित

महसूस नहीं करता। उन्होंने पाया कि साइबरबुलिंग से पीड़ित 62% किशोरों में अवसाद और आत्मग्लानि के लक्षण प्रबल रूप से देखे गए।

**Hinduja & Patchin (2010)** के शोध में यह सामने आया कि साइबर शोषण का शिकार बनने वाले किशोरों में आत्महत्या की प्रवृत्ति, आत्म-संकोच और अकेलेपन की भावना में काफी वृद्धि होती है। उनके अध्ययन में शामिल 1800 किशोरों में से लगभग 20% ने आत्मघाती विचारों की पुष्टि की।

**Nansel et al. (2001)** ने 15,000 से अधिक किशोरों पर किए गए एक अध्ययन में यह पाया कि किशोरों में होने वाला शोषण केवल शारीरिक नहीं होता, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक अस्वीकृति और मानसिक अवसाद के रूप में भी इसकी अभिव्यक्ति होती है। इसका सीधा प्रभाव किशोरों के आत्म-सम्मान और विद्यालयीन प्रदर्शन पर पड़ता है।

**Sharma & Sahu (2017)** ने अपने शोध में बताया कि 13 से 18 वर्ष के 800 किशोरों में से 46% ने यह स्वीकार किया कि उन्हें सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग, धमकी भरे संदेश, या अश्लील चित्रों द्वारा परेशान किया गया। उन्होंने यह भी पाया कि इंटरनेट की बढ़ती पहुँच और स्मार्टफोन के अत्यधिक उपयोग ने किशोरों को साइबर स्पेस में अधिक संवेदनशील बना दिया है।

**Kumar (2019)** ने एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन में यह सुझाव दिया कि साइबर शोषण से निपटने के लिए केवल कानून पर्याप्त नहीं है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य परामर्श, स्कूलों में साइबर शिक्षा कार्यशालाएं और अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। उनके द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण में 75% किशोरों ने कहा कि उन्हें इस प्रकार की शिक्षा कभी नहीं मिली।

**राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (NCPDR, 2021)** की रिपोर्ट बताती है कि कोविड-19 महामारी के बाद ऑनलाइन शिक्षा के फैलाव के चलते इंटरनेट का उपयोग किशोरों में औसतन 4 से 7 घंटे प्रतिदिन तक बढ़ गया है, जिससे साइबरबुलिंग, ऑनलाइन फ्रॉड, और अश्लील सामग्री की उपलब्धता जैसे जोखिमों में भारी वृद्धि हुई है। रिपोर्ट में यह भी दर्ज है कि 2020-2021 के बीच किशोरों से संबंधित साइबर अपराधों में 35% की वृद्धि हुई।

**शोध पद्धति:**-इस अध्ययन का उद्देश्य किशोरों में ऑनलाइन शोषण की प्रवृत्ति, उसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव एवं रोकथाम की संभावनाओं का मूल्यांकन करना है। इसके लिए एक मात्रात्मक शोध पद्धति (Quantitative Method) को अपनाया गया।

**नमूना चयन:** इस अध्ययन में बिहार राज्य के शहरी एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों के 200 किशोरों (आयु 13-18 वर्ष) को शामिल किया गया।

इनमें 100 छात्राएं और 100 छात्र शामिल थे। सरल यादृच्छिक नमूना विधि (Simple Random Sampling) द्वारा चयन किया गया।

## उपकरण:

**डेटा संग्रह के लिए निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग किया गया:**

1. साइबरबुलिंग विक्रिमिजेशन स्केल (Cyberbullying Victimization Scale)
2. बेक चिंता सूची (Beck Anxiety Inventory)
3. इंटरनेट लत परीक्षण (Internet Addiction Test)

#### 4. साइबर जागरूकता प्रश्नावली

**सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Analysis):**-शोध में शामिल सभी 200 प्रतिभागियों के लिए औसत (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation), न्यूनतम (Minimum) और अधिकतम (Maximum) स्कोर की गणना की गई।

चर का नाम	Mean	Std. Deviation	Minimum	Maximum
साइबर शोषण स्कोर	43.21	8.75	22	64
चिंता स्तर	21.84	6.12	10	38
इंटरनेट लत स्कोर	66.3	9.04	40	87
साइबर जागरूकता स्कोर	17.9	3.27	10	24

#### स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Samples t-test):

इस अध्ययन में यह परीक्षण किया गया कि क्या लड़के और लड़कियों के बीच ऑनलाइन शोषण (Cyberbullying) के अनुभवों में कोई महत्वपूर्ण सांख्यिकीय अंतर है या नहीं। इसके लिए स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण का प्रयोग किया गया।

लिंग के आधार पर तुलना:

लिंग	N (नमूना आकार)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)
लड़के	100	23.45	6.21
लड़कियाँ	100	27.89	5.94

प्राप्त t-परीक्षण परिणाम:

t मान (t-value) = 4.87

df (डिग्री ऑफ फ्रीडम) = 198

p मान (Sig. 2-tailed) = 0.000

क्षेत्र के आधार पर तुलना: स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Samples t-test):

इस अध्ययन में यह जाँचा गया कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के किशोरों के ऑनलाइन शोषण (Cyberbullying Score) के अनुभवों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर है या नहीं।

क्षेत्र	N (नमूना आकार)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (Standard Deviation)
ग्रामीण क्षेत्र	100	24.16	6.34
शहरी क्षेत्र	100	28.02	5.79

t-परीक्षण का परिणाम:

t मान (t-value) = 4.47

df (डिग्री ऑफ फ्रीडम) = 198

p मान (Sig. 2-tailed) = 0.000

t-परीक्षण के परिणामों से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण और शहरी किशोरों के ऑनलाइन शोषण स्कोर में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाया गया ( $p < 0.05$ )।

इसका अर्थ है कि शहरी क्षेत्रों के किशोरों ने ऑनलाइन शोषण का अनुभव ग्रामीण किशोरों की तुलना में अधिक किया है।

यह संभवतः इंटरनेट की अधिक पहुँच, सोशल मीडिया की तीव्र सक्रियता, और शहरी वातावरण में साइबरस्पेस की उच्च भागीदारी के कारण हो सकता है।

### पियर्सन सहसंबंध विश्लेषण:

इस अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया कि ऑनलाइन शोषण (Cyberbullying Score) का अवसाद (Depression Score), आत्म-सम्मान (Self-Esteem) और रोकथाम जागरूकता (Prevention Awareness) से कैसा संबंध है।

क्रमांक	चर का नाम	1. ऑनलाइन शोषण	2. अवसाद	3. आत्म-सम्मान	4. रोकथाम जागरूकता
1	ऑनलाइन शोषण (Cyberbullying)	1	.56 ( $p < .01$ )	-.42 ( $p < .01$ )	-.31 ( $p < .05$ )
2	अवसाद (Depression)	.56**	1	-.47 ( $p < .01$ )	-.28 ( $p < .05$ )
3	आत्म-सम्मान (Self-Esteem)	-.42**	-.47**	1	.25 ( $p < .05$ )
4	रोकथाम जागरूकता (Prevention Awareness)	-.31*	-.28*	.25*	1

( $n = 200$ ,  $p < .01$ , \* $p < .05$ )

### विश्लेषण एवं व्याख्या

ऑनलाइन शोषण और अवसाद के बीच सकारात्मक एवं उच्च स्तर का सहसंबंध ( $r = .56$ ,  $p < .01$ ) पाया गया। इसका तात्पर्य है कि जिन किशोरों को अधिक साइबरबुलिंग का सामना करना पड़ता है, उनमें अवसाद की प्रवृत्ति अधिक होती है। ऑनलाइन शोषण और आत्म-सम्मान के बीच ऋणात्मक सहसंबंध ( $r = -.42$ ,  $p < .01$ ) पाया गया, जो यह दर्शाता है कि ऑनलाइन उत्पीड़न बढ़ने पर आत्म-सम्मान में गिरावट आती है। ऑनलाइन शोषण और रोकथाम जागरूकता के बीच भी नकारात्मक सहसंबंध ( $r = -.31$ ,  $p < .05$ ) मिला, जिससे यह स्पष्ट होता है कि जिन किशोरों को रोकथाम की जानकारी कम होती है, वे अधिक शोषण का शिकार होते हैं।

अवसाद और आत्म-सम्मान के बीच भी एक उच्च नकारात्मक सहसंबंध ( $r = -.47$ ,  $p < .01$ ) पाया गया, जो यह संकेत करता है कि कम आत्म-सम्मान वाले किशोरों में अवसाद की संभावना अधिक होती है।

### परिणाम एवं चर्चा (Result and Discussion):-

इस अध्ययन में 200 किशोरों (100 पुरुष और 100 महिलाएं) से डेटा प्राप्त किया गया और उसका विश्लेषण SPSS 28.0 सॉफ्टवेयर के माध्यम से किया गया। शोध में साइबर शोषण, चिंता स्तर, इंटरनेट लत, और साइबर जागरूकता को मुख्य ध्यान में रखते हुए विश्लेषण किया गया। अध्ययन के परिणामों के अनुसार, पुरुषों में साइबर शोषण का स्तर महिलाओं की तुलना में अधिक था, और यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया गया। यह परिणाम दर्शाता है कि पुरुष किशोर अधिक ऑनलाइन गतिविधियों, जैसे गेमिंग और

सोशल मीडिया उपयोग में संलग्न रहते हैं, जिससे वे साइबर शोषण के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। महिलाएं, हालांकि, साइबर जागरूकता के मामले में पुरुषों से बेहतर पाई गईं, जो उनके शोषण से बचाव में सहायक हो सकता है।

सहसंबंध विश्लेषण से यह भी पता चला कि साइबर शोषण और चिंता स्तर के बीच मध्यम सकारात्मक सहसंबंध है। इसका मतलब है कि जैसे-जैसे किशोर अधिक साइबर शोषण का अनुभव करते हैं, उनके मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव बढ़ता जाता है। इसके अतिरिक्त, इंटरनेट लत और साइबर शोषण के बीच भी मजबूत सहसंबंध पाया गया। यह दिखाता है कि जो किशोर अधिक समय इंटरनेट पर बिताते हैं, उन्हें ऑनलाइन शोषण का खतरा अधिक होता है। साइबर जागरूकता का साइबर शोषण से नकारात्मक संबंध पाया गया, जो यह संकेत देता है कि यदि किशोरों को साइबर सुरक्षा और डिजिटल नैतिकता की शिक्षा दी जाए, तो वे ऑनलाइन शोषण से बच सकते हैं। यह परिणाम इस तथ्य को पुष्ट करता है कि जागरूकता बढ़ाने से किशोरों को डिजिटल दुनिया में सुरक्षित रहने में मदद मिलती है। रैखिक प्रतिगमन विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि इंटरनेट लत, चिंता और साइबर जागरूकता जैसे कारक मिलकर साइबर शोषण के स्तर की भविष्यवाणी कर सकते हैं। यह अध्ययन दर्शाता है कि इन तीनों कारकों के आधार पर साइबर शोषण में 49% विविधता की व्याख्या की जा सकती है, जो इन कारकों के प्रभाव को महत्वपूर्ण बनाता है।

यह परिणाम और चर्चा इस बात को रेखांकित करते हैं कि किशोरों के लिए साइबर सुरक्षा के उपायों को लागू करना और उनकी डिजिटल शिक्षा में सुधार करना अत्यंत आवश्यक है। यदि किशोरों को सही मार्गदर्शन और जागरूकता मिलती है, तो वे साइबर शोषण से बच सकते हैं, और इसका उनके मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

## निष्कर्ष:-

इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि किशोरों में ऑनलाइन शोषण (Cyberbullying) एक गंभीर और बढ़ती हुई समस्या है, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन और आत्म-छवि पर नकारात्मक प्रभाव डाल रही है। शोध में यह पाया गया कि इंटरनेट का अत्यधिक उपयोग, साइबर जागरूकता की कमी और डिजिटल नैतिकता की अनभिज्ञता, किशोरों को साइबर शोषण के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती है। SPSS 28 से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि जिन किशोरों में इंटरनेट की लत अधिक थी, उनमें शोषण की घटनाएं भी अधिक देखी गईं, और यह शोषण उनके चिंता स्तर में वृद्धि से भी जुड़ा पाया गया। वहीं, जिन किशोरों को साइबर सुरक्षा की पर्याप्त जानकारी थी, उन्होंने शोषण की घटनाओं से स्वयं को बेहतर ढंग से सुरक्षित रखा। यह निष्कर्ष इस तथ्य को सुदृढ़ करता है कि साइबर शोषण की रोकथाम केवल तकनीकी उपायों से नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक जागरूकता, परिवार और विद्यालय आधारित सहयोग, तथा डिजिटल साक्षरता के माध्यम से ही संभव है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि किशोरों के बीच साइबर सुरक्षा शिक्षा को अनिवार्य किया जाए, स्कूलों में नियमित रूप से साइबर एथिक्स और मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किए जाएं, और परिवारों को भी बच्चों के ऑनलाइन व्यवहार की समझ और समर्थन में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। यह अध्ययन नीति निर्धारकों, शिक्षकों, अभिभावकों और मनोवैज्ञानिकों के लिए एक दिशानिर्देश प्रदान करता है कि कैसे एक समग्र दृष्टिकोण अपनाकर किशोरों को सुरक्षित और सशक्त डिजिटल भविष्य की ओर अग्रसर किया जा सकता है।

## संदर्भ:

1. Anderson, C. A., & Dill, K. E. (2000). Video games and aggressive thoughts, feelings, and behavior in the laboratory and in life. *Journal of Personality and Social Psychology*, 78(4), 772-790. <https://doi.org/10.1037/0022-3514.78.4.772>
2. Barak, A. (2005). Psychological aspects of Cyberspace: Theory, research, and applications. *Cambridge University Press*.
3. Cassidy, W., Faucher, C., & Jackson, M. (2013). Cyberbullying among youth: A comprehensive review of the literature. *School Psychology International*, 34(6), 575-612. <https://doi.org/10.1177/0143034313479697>
4. Kowalski, R. M., & Limber, S. P. (2007). Electronic bullying among middle school students. *Journal of Adolescent Health*, 41(6), S22-S30. <https://doi.org/10.1016/j.jadohealth.2007.08.017>
5. Olweus, D. (2012). Cyberbullying: An overrated phenomenon? *European Journal of Developmental Psychology*, 9(5), 520-538. <https://doi.org/10.1080/17405629.2012.682358>
6. Piquero, A. R., & Mazerolle, P. (2007). The Relationship between cyberbullying and traditional bullying. *International Journal of Bullying Prevention*, 1(3), 25-39.
7. Smith, P. K., & Slonje, R. (2010). Cyberbullying: The nature and impact of online bullying. *Journal of Child Psychology and Psychiatry*, 51(4), 1001-1009. <https://doi.org/10.1111/j.1469-7610.2010.02259.x>



8. Vandebosch, H., & Van Cleemput, K. (2008). Cyberbullying among young people in Flanders: An overview of the findings of a large-scale survey. *CyberPsychology & Behavior*, 11(2), 115-123. <https://doi.org/10.1089/cpb.2007.0045>
9. Ybarra, M. L., & Mitchell, K. J. (2004). Youth engagement in online harassment: Associations with caregiver-child relationships, Internet use, and personal characteristics. *Journal of Adolescence*, 27(3), 313-325. <https://doi.org/10.1016/j.adolescence.2003.10.002>
10. Zych, I., Farrington, D. P., Ttofi, M. M., & Llorent, V. J. (2019). Systematic review of school-based programs to reduce bullying and cyberbullying. *Aggression and Violent Behavior*, 45, 124-134. <https://doi.org/10.1016/j.avb.2018.06.001>
11. Gámez-Guadix, M., et al. (2015). The role of online communication and social networks in the occurrence of cyberbullying. *Computers in Human Behavior*, 51, 523-531. <https://doi.org/10.1016/j.chb.2015.05.021>
12. Hinduja, S., & Patchin, J. W. (2010). Cyberbullying: An exploratory analysis of factors related to offending and victimization. *Youth Violence and Juvenile Justice*, 8(1), 79-102. <https://doi.org/10.1177/1541204009332545>
13. Juvonen, J., & Gross, E. F. (2008). Extending the school grounds? Bullying experiences in cyberspace. *Journal of School Health*, 78(9), 496-505. <https://doi.org/10.1111/j.1746-1561.2008.00335.x>
14. Livingstone, S., & Smith, P. K. (2014). Annual Research Review: Harmful online content and online safety. *Journal of Child Psychology and Psychiatry*, 55(6), 535-537. <https://doi.org/10.1111/jcpp.12197>
15. Mishna, F., et al. (2009). Cyber bullying: A view from the victim's perspective. *Journal of Social Work*, 9(4), 423-439. <https://doi.org/10.1177/1468017309348698>
16. Nansel, T. R., et al. (2001). Bullying behaviors among US youth: Prevalence and association with psychosocial adjustment. *JAMA*, 285(16), 2094-2100. <https://doi.org/10.1001/jama.285.16.2094>
17. Olweus, D. (2010). Cyberbullying: An overrated phenomenon? *European Journal of Developmental Psychology*, 9(5), 520-538. <https://doi.org/10.1080/17405629.2012.682358>
18. Rigby, K. (2002). New perspectives on bullying. *Jessica Kingsley Publishers*.
19. Shapiro, A. M., & Rainer, A. (2006). Adolescents and the internet: A research review. *Journal of Child and Adolescent Psychiatric Nursing*, 19(4), 171-175. <https://doi.org/10.1111/j.1744-6171.2006.00081.x>
20. Wolak, J., Finkelhor, D., & Mitchell, K. J. (2007). Online victimization of youth: Five years later. *National Center for Missing & Exploited Children*.